शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No- 164-169
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. शारदा वंदना

सहायक प्राध्यापिका एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, जीएलएम कॉलेज, बनमनखी, अंगीभूत इकाई पूर्णियां विश्वविद्यालय, पूर्णियां.

Corresponding Author :

डॉ. शारदा वंदना

सहायक प्राध्यापिका एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, जीएलएम कॉलेज, बनमनखी, अंगीभूत इकाई पूर्णियां विश्वविद्यालय, पूर्णियां.

भारतीय दर्शन में भौतिकवाद की अवधारणा

सारांश : भौतिकवाद अत्यंत प्राचीन विचारधारा है। कदाचित् तब से ही जब से दर्शन का जन्म हुआ। भौतिकवाद क्रांतिकारी सिद्धांत ही नहीं अपितु पूरब और पश्चिमी समाज का दर्शन है। भौतिकवाद भारतीय दार्शनिक चिंतन की एक धारा है। यह भारतीय दर्शन में प्राचीन काल से अविरल रुप से प्रवाहित होती रही है। इसे लेकर भारतीय विमर्श में यह भ्रांति रही है कि भौतिकवाद भारत की उपज नहीं है बल्कि यह पश्चिमी देशों से आयातित विचार है जबकि सत्य है कि भौतिकवाद का जन्म भारत में एक दर्शन के रुप में हुआ है।

भारतीय दर्शन में दो प्रकार की जीवन दृष्टि मुख्य रुप से सामने आती है। पहली भौतिक जीवन दृष्टि एवं दूसरी आध्यात्मिक जीवन दृष्टि। जड़ या भौतिक द्रव्य उसे कहा जाता है जो कुछ जगह लेता है तथा उसका ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों द्वारा होता है। वाह्य जगत के पदार्थों को स्थूल रुप से देखने पर हम कुछ ठोस, कुछ द्रव्य और कुछ गैस पाते हैं। इनमें भिन्नता होते हुए भी एक सामान्य है, जिसे जड़ या भौतिक कहते हैं।

विशिष्ट शब्द: भौतिकवाद, दर्शन, विचारधारा, जड़, भौतिक द्रव्य भारतीय, दार्शनिक, चिंतन।

भूमिका : भौतिकवाद वह तत्वशास्त्रीय सिद्धांत है, जिसके अनुसार विश्व का मूल तत्व जड़ द्रव्य या भौतिक द्रव्य है। भौतिकवाद गति की वास्तविकता को भी स्वीकार करता है। इसके अंतर्गत दो तरह के विचार है। एक विचार यह है कि गति भौतिक द्रव्य के अंदर ही निहित है, जबकि दूसरे का मानना है कि गति उसमें बाहर से आती है। मेज-कुर्सी जैसे जड़ पदार्थ बिल्कुल मृत, स्थिर हैं जबकि जीवधारियों में गति है चेतना है तथा मनुष्य जैसे चेतन एवं आत्म-चेतन प्राणी अनेकानेक प्रकार के वैचारिक और बौद्धिक कर्म करते हैं।[1]

भारतीय दर्शन का सबसे प्राचीन भौतिकवादी या जड़वादी दर्शन चार्वाक दर्शन है। इसका काल ईसा से छठी अथवा सातवी शताब्दी पूर्व मानी जाती है। इस दर्शन का संकेत वेद, बौद्ध साहित्य तथा पुराण साहित्य जैसे प्राचीन कृतियों में मिलता है। माधवाचार्य के 'सर्वदर्शनसंग्रह' नामक ग्रंथ के प्रथम अध्याय में चार्वाक दर्शन का विवरण दिया गया है। जयराशि भट्ट के 'तत्त्वोपप्लवसिंह' नामक ग्रंथ जो 1940 में प्रकाशित हुआ को छोड़कर इस मत का कोई अन्य मौलिक ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। कृष्णपति मिश्र ने अपने 'प्रबोधचन्द्रोदय' नामक

नाटक के द्वितीय अंक में चार्वाक-सिद्धान्त का वर्णन किया है। इन सबके अलावा इस मत के मुख्य स्रोत अन्य दार्शनिक ग्रंथों में पूर्व-पक्ष के रुप में उल्लिखित इस मत के सिद्धान्त है जिनसे इस दर्शन का पूर्ण और सम्यक् विवरण प्राप्त नहीं होता है। उपनिषदों के साथ-साथ रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, विष्णुपुराण, चाणक्य के अर्थशास्त्र, मनुस्मृति आदि प्राचीन ग्रंथों में भी चार्वाक दर्शन की जानकारी मिलती है।

चार्वाक दर्शन की उत्पत्ति असंतोष से हुई तथा सूक्ष्म बौद्धिक चिन्तन से इसकी समाप्ति हो गयी। उपनिषद्-दर्शन का उच्च विज्ञानवाद, वेद में स्थित कर्म-काण्ड को ब्राह्मणों द्वारा अपनी जीविका का साधन बनाकर उसका दुरुपयोग करना यज्ञो में पशुबलि की प्रथा, उस समय की सामाजिक एवं राजनीतिक अव्यवस्था एवं अस्थिरता आदि के कारण चार्वाक दर्शन का उदय हुआ।[2]

भारतीय दर्शन में भौतिकवाद की परंपरा चार्वाक और लोकायत दर्शन के नाम से ख्यात है और षड्दर्शनों में सम्मानजनक स्थान रखती है। इसके अलावा सांख्य, न्याय तथा वैशेषिक जैसे अपरंपरावादी दर्शनों में भी प्रत्ययवाद का खंडन और भौतिकवादी तत्व मिलते है। वैदिक युग में भी भौतिकवाद के तत्व देखने को मिलते हैं। वैदिक युग में भौतिक सुख को महत्व दिया गया है तथा आध्यात्मिक अनुभूति को गौण स्थान दिया गया है। इस काल में विश्व के विभिन्न भौतिक पदार्थों की पूजा परम सत्य के रुप में की गई है। वेदों में प्रकृतिवाद को प्रतिष्ठित किया गया है, जिससे भौतिकवादी चिंतन की पुष्टि होती है। वैदिक कर्मकांडों का मूल उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति नहीं बल्कि भौतिक सुखों की प्राप्ति था। उपनिषद् काल के बाद तथा बौद्ध काल के पूर्व भारत में भौतिकवाद अस्तित्व में आया। उपनिषदों में मानव क्रियाकलापों के महत्व पर बल दिया गया है। इसमें माना गया है कि जगत निरंतर परिवर्तन और स्थान्तरण की प्रक्रिया से गुजरता रहा है।

पाश्चात्य दर्शन में भौतिकवाद की उत्पति दर्शनशास्त्र की उत्पत्ति के साथ ही मानी गयी है। पाश्चात्य दर्शन में विश्व का निर्माण केवल भूत तत्व से माना गया है। प्रत्येक वस्तु किसी न किसी भौतिक प्रक्रिया या पदार्थ द्वारा उत्पन्न होती है। थेलिज को पाश्चात्य दर्शन का जनक माना जाता है। उन्होंने सर्वप्रथम यह प्रश्न उठाया कि आखिर यह विश्व कहां से आया? वह कौन सा मूल तत्व है, जिसे यह संसार उत्पन्न हुआ? यहीं से पाश्चात्य जगत में भौतिकवादी विचारधारा की शुरुआत हुई। उन्होंने जल को ही परमतत्व माना है जिससे सृष्टि की स्थिति और प्रलय होती है। जल वाष्प तथा बूंद रुप में होकर जीवन प्रदान करता है। जल ही विश्व का उपादान कारण है। इनके बाद एनेक्जिमेंडर, ऐनेक्जिमेनीज, हेराक्लाइटस, एंपेडाक्लीज, एनेक्जेगोरस, ल्युसिपस और डिमॉक्रिटस जैसे पाश्चात्य विचारकों ने भी विश्व की उत्पत्ति का कारण जल, वायु तथा अग्नि आदि भौतिक तत्वों में एक, दो या सबको माना।[3] समकालीन भारतीय दर्शन में भौतिकवादी चिंतन की झलक स्पष्ट रुप से मौजूद है। समकालीन भारतीय चिंतकों के दर्शन का केन्द्र बिन्दु मनुष्य है। आज के युग के दो सर्वोच्च आदर्श हैं-मानवतावाद और वैज्ञानिक परम्परा। समकालीन भारतीय दार्शनिक इन दोनों के समन्वय से ही मानव कल्याण की बात कहते हैं। यही कारण है कि आज के दार्शनिक और चिंतक अपनी चिंतन प्रणाली को आध्यात्मवाद की ओर से मोड़कर भौतिकवाद की ओर करने के प्रयास में लगे हैं।

प्राचीन भारतीय दर्शन में भौतिकवाद तथा अध्यात्मवाद दोनों समान रुप से पाए जाते हैं। ऋग्वेद में प्रकृति को शक्ति पुंज माना गया है। ईश्वर किसी न किसी प्राकृतिक शक्ति की अभिव्यक्ति है। इसलिए वेदों में प्रकृति पूजा प्रमुख है। राधाकृष्णन ने भौतिकवाद के संबंध में कहा है कि "ऋग्वेद की ऋचाओं में भी इसके अंकुर पाए जाते हैं। "प्राकृतिक शक्तियों के प्रति मानव की शुरु से ही श्रद्धा रही है। मनुष्य ईश्वर की आराधना इसलिए करता है कि उसे भौतिक सुख, स्वास्थ्य, धन एवं सौंदर्य की प्राप्ति हो। वैदिक युग में भौतिक सुख को महत्व दिया गया है तथा आध्यात्मिक अनुभूति को गौण स्थान दिया गया है। सोमरस का पान करना तथा ईश्वर को खुश करने के लिए नाचना-गाना भौतिकवादी मानसिकता है। वैदिक काल में ईश्वर की पूजा आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए न होकर भौतिक सुखों के लिए की जाती रही है। वैदिक कर्मकांडों का मूल उद्देश्य ब्रह्म से साक्षात्कार या मोक्ष प्राप्ति नहीं था बल्कि इसका उद्देश्य जीवन के लिए उपयोगी अच्छी-अच्छी वस्तुएं, अच्छी संतानें, धन, गाय-बैल आदि प्राप्त करना या शत्रुओं का नाश करना था। जिन देवताओं की पूजा की जाती थी, वे प्रकृति के साधारण तत्व थे।

विधिपूर्वक और बिना त्रुटि के मंत्रोच्चारण के साथ किया गया यज्ञ अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पर्याप्त माना जाता है। इस तरह वैदिक युग में मानव मस्तिष्क इस जगत की वास्तविकताओं के बहुत नजदीक था।[4]

डॉ. राधाकृष्णन लिखते हैं: वैदिक विचारक जगत के उद्गम एवं स्वरुप संबंधी दार्शनिक समस्याओं की ओर से उदासीन नहीं थे। प्रत्येक परिवर्तनशील पदार्थ के आदिम आधार की खोज में उन्होंने प्राचीन विद्वानों के समान जल, वायु आदि को ही मौलिक तत्व के रुप में माना, जिनके परस्पर एकत्र होने से इस विविध जगत की उत्पत्ति हुई। वैदिक युग के अनेक कवियों के विचारों में भौतिकवादी चिंतन की स्पष्ट झलक दिखलाई पड़ती है। डॉ भट्टाचार्य लिखते हैं, "ऋग्वेद में बृहस्पति भारतीय भौतिकवाद के आदि प्रणेता माने जाते हैं। उन्होंने ही सर्वप्रथम पदार्थ को परम सत्य घोषित किया। वे आत्मा की अमरता और मृत्यु के बाद की जीवन की अवधारणा के भी विरोधी थे।"[5] वेदों में अन्न, सोम तथा अन्य वस्तुओं से संबंधित सूक्त हैं, जो प्रमाणित करते हैं कि वैदिक कवियों के लिए भौतिक वस्तुओं का कितना महत्व था। यह ऋग्वेद के निम्नलिखित सूक्त से स्पष्ट होता है-

पितुंनु स्तोषं महीं धर्माणां तविषिम।
यस्य त्रितो व्योज सा वृत्रं तिपर्वमर्दयत्।
स्वादो पितो मद्यो पितो वयं त्वा ववृमहे।
अस्माकमवित भव।
उप नः पितवा चर शिवः शिवाभिरूतिभिः।
मयोभुर व्दिषेण्यः सखा सुशेवो अव्दयाः
तव त्ये पितो रसा रजांस्यानु विष्ठिताः
दिवि वाता इव श्रिताः
तव त्ये पितो ददतस्तव स्वादिष्ठते पितो।
प्र स्वादमानो रसानां तुवीग्रीवा इवेरते।"[6]

अब मैं अत्यंत बलदाता अन्न का स्तवन करता हूं, जिसके बल से त्रित ने वृत्र के जोड़-जोड़ को तोड़कर मार डाला?। हे, सुस्वादु अन्न! तू मधुर है, हमने तेरा वरण किया है तू हमारा रक्षक हो। हे अन्न! तू कल्याण स्वरुप है। अपनी रक्षाओं सहित हमारी ओर आ। तू स्वास्थ्य दाता हमको हानिप्रद न हो और अद्वितीय मित्र के समान सुखकर हो। हे अन्न! वायु के अन्तरिक्ष में आश्रय लेने के समान तेरा रस संसार में व्यापक है। हे पालक और सुस्वादु अन्न! तेरा दान करने वाले तुम्हारी कृपा चाहते हैं। तुम्हारे सेवनकर्ता तुम्हारी प्रार्थना करते हैं। तुम्हारा रस आस्वादन करने वालों की ग्रीवा उन्नत और दृढ़ करता है।

ऋग्वेद के दूसरे मंडल में भी अग्नि सोम, अन्न तथा अन्य भौतिक पदार्थों पर अनेक प्रकार के गुणों को आरोपित कर स्तुति की गई है। इंद्र को भी मानवीय और अति मानवीय गुणों से आरोपित किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वैदिक युगीन मनुष्य इस संसार से परे किसी दूसरे लोक को नहीं जानते थे। उनका उद्देश्य इसी संसार में सुख पूर्वक जीवन बिताना था।

अथर्ववेद सब वेदों में अर्वाचीन है तथा वेदों में यह चतुर्थ वेद है। इसमें विभिन्न सांसारिक शक्तियों यथा राजा, विवाह, बल और शरीर आदि के संबंध में मंत्र दिये गये हैं। अथर्ववेद के तृतीय अंक में 'जल' का वर्णन प्राच्य भौतिकवाद का समर्थन करता है। इसी प्रकार यजुर्वेद में अग्नि, अन्न, राजा के कर्तव्य, गृहस्थ के कर्तव्य , शत्रुनाश, योगाभ्यास आदि के लिए प्रार्थना की गई है। यजुर्वेद के 25वें अध्याय में शरीर की विभिन्न क्रियाओं या व्यापारों की तुलना की गई है। इस वेद के 26वें अध्याय में पृथ्वी, अग्नि और सूर्य आदि का वर्णन किया गया है।[7]

इस तरह वेदों में प्रकृतिवाद को प्रतिष्ठित किया गया है। यहां न सिर्फ अन्न, जल, वायु, अग्नि, सोम आदि भौतिकवादी पदार्थों की प्रशंसा में गीत गाये हैं, बल्कि देवताओं को भी मनुष्य की तरह व्यवहार करते दिखलाया गया है, जिससे भौतिकवादी अवधारणा की ही पुष्टि होती है।

उपनिषदों को पूर्ण रूप से आध्यात्मवादी माना गया है तथा भारतीय दर्शन के समस्त आध्यात्मवादी विचारों का आधार भी उपनिषदों को ही माना गया है। फिर भी वेदों की तरह उपनिषदों में भी कई ऐसे अवतरण हैं,

जिनसे भौतिकवाद की पुष्टि होती है। यह संसार विविधताओं से भरा हुआ है। लेकिन इस विविधता के अंदर एकता है, प्रकृति के असंख्य क्रियाकलापों के पीछे एक एकता है। भौतिकवादी दृष्टिकोण से यह एकता ब्रहमांड की वास्तविक एक पदार्थीय एकता है। भारत के प्राचीन भौतिकवादी दार्शनिक यह मानते थे कि समस्त वस्तुओं का उद्भव इस समूचे ब्रह्ममांड में अन्तनिर्हित एक ही भौतिक पदार्थ से हुआ है।

मुण्डकोपनिषद में ब्रह्म के दो रूपों की चर्चा है। मूर्त ब्रह्म और अमूर्त ब्रह्म। जो कुछ भी वायु और वायुमंडल से भिन्न है उसे मूर्त ब्रह्म कहा जाता है जो नश्वर, निश्चल है और यथार्थ हैः जबकि वायु और वायुमंडल अमूर्त ब्रह्म है-अनश्वर चल और सत्। इस प्रकार यह संसार ब्रह्म से परे और अलग कोई चीज नहीं है। वह स्वयं ब्रह्ममांड ही है। यह समस्त जगत्, तमाम जैव और अजैव पदार्थों सहित तमाम वस्तुओं और विचारों सहित ब्रह्म है। इसका अर्थ यह नहीं कि इन सब की सृष्टि अनिवार्यतः किसी एक ईश्वर विशेष ने की है। औपनिषदिक दार्शनिक जगत के यथार्थ और उसके भौतिक स्वरुप को स्वीकार करते थे और संसार के विकास को पदार्थ के एक रुप से दूसरे रुप में रुपांतरण कहकर उसकी व्याख्या करते थे। जैसे आकाश से अग्नि, जल से अन्न आदि। छांदोग्य उपनिषद में आकाश को उत्पत्ति का मूल कारण, आधार और अंत माना गया है। प्राण उपनिषद में सृष्टि के रहस्य का समाधान प्रस्तुत करते हुए कहा गया है "वास्तव में यह सब ही पदार्थ हैं, जो भी रुपमय और रुप रहित है, अतः जो कुछ भी स्थायित है, वही पदार्थ है।[8] ब्रह्ममांड की उत्पत्ति के संबंध में सुबाल उपनिषद में कहा गया है "तब यहां क्या था? यह न तो अस्तित्वमय था और न अस्तित्वहीन था। उससे अंधकार उत्पन्न हुआ, अंधकार से सूक्ष्म तत्व उत्पन्न हुए, सूक्ष्म तत्वों से आकाश उत्पन्न हुआ, आकाश से वायु उत्पन्न हुई, वायु से अग्नि उत्पन्न हुई, अग्नि से जल उत्पन्न हुआ, जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई।[5]

तैत्तरीय उपनिषद् में अन्न के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है।

अन्नं न निन्द्यातम। प्राणों वा अन्नम शरीरमन्नादम।
प्राणो शरीरं प्रतिष्ठितम्। शरीरं प्राणः प्रतिष्ठितः।
तदेतदन्नामन्त प्रतिष्ठितम्। स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितः
वेद प्रतिष्ठति। अन्न वानन्नादो भवति
महान भवति प्रजया पशुभिब्रम्ह्वचंसेन। महान कीत्र्या।"[9]

अन्न की निंदा नहीं करनी चाहिए, अन्न ही व्रत है। वही प्राण है। शरीर अन्न को भोगने वाला है, शरीर प्राण के आश्रित है और प्राण शरीर के आश्रित है। इस प्रकार अन्न में अन्न स्थित है, जो ज्ञानी ऐसा जानता है वह अन्न में प्रतिष्ठित होता है, अन्नवान व्यक्ति अन्न से संपन्न, संतान, पशु, ब्रह्मवर्चस्व कीर्ति से युक्त होकर महान बनता है।
वहीं अष्टम अनुवादक में भी जल और तेज का उल्लेख है-

अन्न न परिचक्षीत। तद व्रतम।
आपो वा अन्नम ज्योतिरन्नादम।
अप्सु ज्योतिः प्रतिष्ठितम्
ज्योतिष्याप प्रतिष्ठिताः।
तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेदं प्रतितिष्ठिति।
अन्नवादन्नदो भवति। महान प्रजया।
पशुभिब्रहम वर्चसेन। महान् कीत्र्या।"[10]

अन्न का कभी परित्याग न करें। जल ही अन्न है, तेज अन्न को भोगने वाला है। जल में तेज निहित है, जो इसे जानता है वह इस विज्ञान में निपुण हो जाता है। अन्नवान् अन्न सेवन करने में समर्थ होता है और संततिवान, पशुवान, ब्रह्म तेजस्वी तथा कीर्तियुक्त होकर महान बन जाता है।

उपरोक्त सूक्तों से स्पष्ट होता है कि औपनिषदिक युग में भी इस शरीर तथा अन्य पदार्थों की उत्पत्ति पांच तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश से बतायी गयी है। साथ ही मन, बुद्धि और इन्द्रियों को भी इन्हीं तत्वों से उत्पन्न और परिपुष्ट बतलाया गया है, जो भौतिकवाद का समर्थन करता है। आधुनिक मनोविज्ञान की तरह

ज्ञानेन्द्रियों तथा उनके कार्यों का भी स्पष्ट वर्णन किया गया है, जिनसे स्पष्ट होता है कि औपनिषदिक युग के मनुष्यों के सोचने का ढ़ंग अत्यन्त ही वैज्ञानिक था। इस प्रकार यह अवश्य सत्य है कि उपनिषद आदर्शवाद से सराबोर है, फिर भी हमें इनमें भौतिक जगत की वास्तविकताओं की ठोस स्वीकृति देखने को मिलती है।

उद्यालक आरूणि उपनिषद् काल में एक सशक्त भौतिकवादी दार्शनिक हुए। उनकी विश्व दृष्टि वस्तुवादी और भौतिकवादी है। ये भारतीय दर्शन के पहले भौतिकवादी दार्शनिक हैं। इन्हें ग्रीक दार्शनिक थेलिज के पूर्व का दार्शनिक माना जाता है। इनके भौतिकवादी विचार आजीवक एवं चार्वाक दर्शन के पहले आते हैं। इन्होंने ही सबसे पहले बताया कि प्राकृतिक वस्तुएं भौतिक घटनाओं से बनी है। इन्होंने विश्व के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण रखते हुए उदाहरण देकर स्पष्ट किया है कि भोजन का त्याग कर देने से शरीर निर्बल व कमजोर हो जाता है। ऐसी स्थिति में वैदिक मंत्रों के उच्चारण से शारीरिक कमजोरी में कोई सुधार नहीं होगा बल्कि भोजन मिलने से शरीर में सुधार आता है। इसलिए भौतिकवाद की आवश्यकता जीवन में सर्वाधिक है। उद्यालक आरूणि के अनुसार विचार भूत का सूक्ष्म अंश है तथा भूत ही विचार के स्रोत हैं। हम जो भोजन करते हैं, उससे हमारा विचार प्रभावित होता है। मानव भी भूत से ही उत्पन्न होता है, शून्य से नहीं। इसलिए जो भी विचार उत्पन्न होता है वह भूत पर आश्रित है।[11]

छांदोग्य उपनिषद के छठे अध्याय में उद्यालक तथा पुत्र श्वेतकेतु के बीच वार्तालाप में तीन तत्वों अग्नि (तेजस), जल (अप) तथा भोजन (अन्न) को संसार का मूल तत्व कहा गया है।

सम्राट अशोक के समय आजीवक एक प्रचलित मत था। आजीवक यंत्रवाद में विश्वास करता है। यंत्रवाद को नियतिवाद भी कहते हैं। आजीवक तथा चार्वाक के स्वतंत्र रुप से विकसित होते हुए भी दोनों में भौतिकवादी चिन्तनधारा में समानता है। दोनों में अंतर है कि आजीवक ज्ञानमीमांसा को प्राथमिकता नहीं देता जबकि चार्वाक का भौतिकवाद ज्ञानमीमांसा पर बल देता है। आजीवक नास्तिक चिंतन है, आजीवक बौद्ध दार्शनिक मख्खलि गोसाल के अनुयायी हैं। अजीत केशकंबली और मख्खलि गोसाल बुद्ध के समय के भौतिकवादी चिंतक थे।[12]

अजित केशकंबली के अनुसार मनुष्य चार तत्वों का सम्मिश्रण है और आत्मा शरीर के अतिरिक्त कुछ नहीं है। मरणोपरान्त कोई दूसरा जीवन नहीं होता। मनुष्य जब मर जाता है, तो उसके अंदर के पार्थिव तत्व पृथ्वी के समुच्चय में मिल जाते हैं। गर्मी आग में मिल जाती है, द्रव्य तत्व पानी में मिल जाते हैं और वायु हवा में मिल जाती है तथ उसके इन्द्रिय तत्व (पांचों इन्द्रियां छठा मस्तिष्क) आकाश में विलीन हो जाते हैं। अजित केशकंबली के विचार इस तरह व्यक्त हुए हैं:- 'पैरों से ऊपर की ओर और सिर के बालों की नोक से नीचे की ओर खाल के अंदर वह है, जिसे (जीव) अथवा आत्मा कहते हैं, दोनों एक ही है। समूची आत्मा जीवित रहती है। जब शरीर मृत्यु को प्राप्त होता है तब, आत्मा भी जीवित नहीं रहती, वह तब तक जीवित रहती है जब तक शरीर जीवित रहता है, जो लोग यह दावा करते हैं कि आत्मा शरीर से अलग कोई दूसरी चीज है, वह यह नहीं बता सकते कि आत्मा (शरीर से अलग) लम्बी है या पतली है, गोलाकार है या कोणयुक्त है, तिकोणी है या चैकोणी है, षटकोणी है, अठकोणी है या सीधी है, वह काली है या नीली है या लाल है या पीली है या सफेद है उसकी महक मीठी है या नहीं, वह कड़वी है, चटपटी है, खट्टी है या मीठी है वह कड़ी है या मुलायम, भारी है या हल्की, वह ठंडी है या गरम है, वह समतल है या खुरदरी है। इस प्रकार जो लोग यह कहते हैं कि आत्मा शरीर से भिन्न है, गलत बात कहते हैं।[13]

आजीवक सम्प्रदाय के संस्थापक मख्खलि गोसाल जो बुद्ध और महावीर के समकालीन थे, जिनके विचारों का उल्लेख दीर्घ निकाय, 1/2 में मिलता है। वह पुरोहितों के कर्मकांडों का पूरी दृढ़ता से विरोध करते थे तथा आत्मा के आवागमन के सिद्धांत का मजाक उड़ाते थे। उनकी मान्यता थी कि यह समस्त ब्रह्ममांड केवल चार भौतिक तत्व जल, वायु, पृथ्वी और अग्नि से निर्मित है तथा इस संसार में जो कुछ होता है वह कर्म द्वारा नहीं बल्कि नियति द्वारा निर्धारित होता है।[14]

भारतीय दर्शन की परम्परा में चार्वाक प्राचीनतम दर्शन माना जाता है। यह भारतीय भौतिकवादी चिंतन का आधार है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार इस दर्शन का उदय उपनिषद और महाभारत के रचना के मध्य हुआ है। वैदिक ज्ञान तत्व के प्रति तत्कालीन जब समुदाय ने अविश्वास का प्रारंभ इसी अंतराल में हुआ। यह वह समय था जब पूर्व स्थापना के विरोध में चार्वाकों ने सामाजिक विचारों, व्यवहारों, पारिवारिक तथा व्यक्तिगत

जीवन को संशयात्मक दृष्टि से देखा। उनकी दृष्टि तीक्ष्ण थी और वे विचारों के परीक्षा में प्रवीण थे।

चार्वाक दर्शन को लोकायत भी कहा जाता है। इसका मूल ग्रंथ है बार्हस्पत्य सूत्र। आचार्य वृहस्पति द्वारा प्रतिपादित होने के कारण इसे बार्हस्पत्य दर्शन भी कहा जाता है। चार्वाक दर्शन ईश्वर तथा वेद का खंडन करता है। इसलिए इसे नास्तिक दर्शन कहते हैं। इसे भारतीय भौतिकवाद का शिरोमणि कहा जाता है। चार्वाक ने पृथ्वी, जल, अग्नि तथा वायु तत्वों की ही सत्ता स्वीकार की है। इसके अनुसार भौतिक तत्वों के संयोग से स्वभावतः सृष्टि होती है। इसलिए इस दर्शन को स्वभाववादी या प्रकृतिवादी कहा गया है। इसके अनुसार विश्व की सभी चीजों का विकास उनकी स्वाभविक प्रकृति है। इसमें जीवन का लक्ष्य सुख प्राप्ति बताया गया है। इसलिए इसे सुखवादी दर्शन कहा गया है।[15]

निष्कर्ष : भारत में भौतिकवाद का अस्तित्व प्राचीन काल से है। भौतिकवाद क्रांतिकारी सिद्धांत ही नहीं अपितु पूरब और पश्चिमी समाज का दर्शन है। भौतिकवाद भारतीय दार्शनिक चिंतन की एक धारा है। यह भारतीय दर्शन में प्राचीन काल से अविरल रुप से प्रवाहित होती रही है। इसे लेकर भारतीय विमर्श में यह भ्रांति रही है कि भौतिकवाद भारत की उपज नहीं है बल्कि यह पश्चिमी देशों से आयातित विचार है जबकि सत्य है कि भौतिकवाद का जन्म भारत में एक दर्शन के रूप में हुआ है।

सामान्यत: भारतीय दर्शन की मूल प्रवृत्ति आध्यात्मवादी है। लेकिन भौतिकवाद को भी नकारा नहीं जा सकता। आध्यात्मवाद और भौतिकवाद एक ही सिक्के के दो पहलू है। आत्मा के बिना शरीर जैसे मृत है वैसे ही शरीर के बिना आत्मा भी असहाय है। ईश्वर को न मानने के कारण जैन, बौद्ध आदि सम्प्रदायों को भौतिकवादी नहीं का जा सकता क्योंकि ये न तो धर्म-विरोधी है, न नीति विरोधी और न ही भौतिक सुखों को जीवन का लक्ष्य बताने वाले हैं। मूल रूप से चार्वाक दर्शन ही ऐसा दर्शन है जो पूर्णरुपेण भौतिकवादी है। इसे नास्तिक शिरोमणि की उपाधि से सुसज्जित किया गया है। भारतीय दर्शन में आध्यात्मवाद को जो स्थान दिया गया है, वह स्थान भौतिकवाद को नहीं दिया गया है। लेकिन भौतिकवाद भी उतना ही मूल्यवान है जितना आध्यात्मवाद।

सन्दर्भ-सूची :

1. वर्मा, वेद प्रकाश, नीति शास्त्र के मूल सिद्धांत, ऍलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड, दिल्ली, 2017, पृष्ठ 422, 423.
2. शर्मा, चन्द्रधर, भारतीय दर्शन (आलोचन और अनुशीलन), मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, दिल्ली, 2010, पृष्ठ सं0-23.
3. सिन्हा, प्रो0 हरेन्द्र प्रसाद, भारतीय दर्शन की रुपरेखा, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2016, पृष्ठ सं0-86, 88, 95.
4. सक्सेना, डॉ0 लक्ष्मी, समकालीन भारतीय दर्शन, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2017, पृष्ठ सं0-327, 328, 329.
5. कपूर, डॉ. कुमकुम-एम.एन. राय, नवोग्र मानववाद और मार्क्स, पृ. 107.
6. अग्रवाल, जी.के. और शर्मा, श्रीनाथ- प्रमुख सामाजिक विचारक, पृ. 156.
7. यादव, राजनंदन- भारतीय दर्शन में भौतिकवाद तत्त्व, पृ. 160.
8. सिन्हा, रमेशचंद्र - समकालीन भारतीय चिंतक, पृ. 272.
9. वही, पृ. 258-277.
10. पांडेय, संगम लाल- नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण, पृ. 279.
11. सक्सेना, डॉ. लक्ष्मी- समकालीन भारतीय दर्शन, पृ. 368.
12. यादव, राजनंदन- भारतीय दर्शन में भौतिकवाद, तत्त्व, पृ. 163.
13. राय, एम.एन. फिलिप स्ट्रैट साम्यवाद के पार, पृ. 66-67..
14. सिन्हा, रमेशचंद्र - समकालीन भारतीय चिंतक, पृ. 267-268
15. मिश्र, अर्जुन-दर्शन की मूल धाराएं, पृ. 77.

•